ISSN: 2349-6002

सांख्य दर्शन और पर्यावरणीय चेतना : एक तात्त्विक एवं समकालीन अध्ययन

अर्जुन जे. वाढिया, डॉ. तृप्ति एम. गजेरा
आदित्य बी.एड. कॉलेज जूनागढ़
मार्गदर्शक – मददनीश प्राध्यापिका, दर्शनशास्त्र विभाग, धर्मेंद्रसिंहजी आर्ट्स कॉलेज, राजकोट
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191139-459

सारांश: समकालीन विश्व आज गंभीर पर्यावरणीय संकट के दौर से गुजर रहा है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव-विविधता का ह्रास और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन मानव सभ्यता के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। आधुनिक विज्ञान और तकनीकी विकास ने भौतिक प्रगति तो प्रदान की है, किंतु इसके साथ-साथ प्रकृति के प्रति मानव के शोषणकारी दृष्टिकोण को भी बढ़ावा दिया है। इस संदर्भ में पर्यावरणीय संकट के समाधान हेतु केवल वैज्ञानिक या तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं प्रतीत होते, बल्कि एक गहरे दार्शनिक और नैतिक दृष्टिकोण की भी आवश्यकता है।
भारतीय दर्शन की प्राचीन परंपरा में प्रकृति को केवल भोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन का आधार और सहचर माना गया है। विशेष रूप से सांख्य दर्शन प्रकृति को सृष्टि का मूल तत्त्व स्वीकार करते हुए उसके सूक्ष्म, व्यवस्थित और संतुलित स्वरूप का विश्लेषण करता है। पुरुष–प्रकृति द्वैत, त्रिगुण सिद्धांत तथा विवेकज्ञान की अवधारणा पर्यावरणीय चेतना के विकास हेतु एक सशक्त दार्शनिक आधार प्रदान करती है।
प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य सांख्य दर्शन के मूल तात्त्विक सिद्धांतों के आलोक में पर्यावरणीय चेतना का विश्लेषण करना तथा यह प्रतिपादित करना है कि किस प्रकार सांख्य दर्शन समकालीन पर्यावरणीय संकट के समाधान में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सांख्य दर्शन मानव और प्रकृति के बीच संतुलित, नैतिक और सह-अस्तित्व आधारित संबंध की स्थापना कर पर्यावरणीय चेतना को सुदृढ़ करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): **सांख्य दर्शन, प्रकृति, त्रिगुण सिद्धांत, पर्यावरणीय चेतना, विवेकज्ञान, सतत विकास**

अनुसंधान के उद्देश्य (**Objectives of the Study)**

सांख्य दर्शन के तात्त्विक आधार का अध्ययन करना।
सांख्य दर्शन में प्रकृति की अवधारणा को स्पष्ट करना।
त्रिगुण सिद्धांत और पर्यावरणीय संतुलन के संबंध का विश्लेषण करना।
समकालीन पर्यावरणीय संकट को सांख्य दर्शन के दृष्टिकोण से समझना।
पर्यावरणीय चेतना के विकास में सांख्य दर्शन की प्रासंगिकता को प्रतिपादित करना।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology**)**

यह शोध गुणात्मक (**Qualitative)** एवं दार्शनिक-विश्लेषणात्मक (**Philosophical Analytical)** पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु सांख्यकारिका, भारतीय दर्शन के प्रामाणिक ग्रंथों, तथा आधुनिक पर्यावरणीय दर्शन से संबंधित पुस्तकों और शोध-पत्रों का संदर्भ लिया गया है। व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है।

भूमिका (Introduction)

इक्कीसवीं सदी का मानव अभूतपूर्व पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति ने प्राकृतिक संसाधनों के अति-दोहन को जन्म दिया है। वनों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, वैश्विक तापवृद्धि और जैव-विविधता का विनाश आज वैश्विक चिंता के विषय बन चुके हैं। यद्यपि आधुनिक विज्ञान पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान हेतु अनेक तकनीकी उपाय प्रस्तुत करता है, तथापि ये उपाय तब तक प्रभावी नहीं हो सकते जब तक मानव की मूल दृष्टि और मूल्य-चेतना में परिवर्तन न आए।
पर्यावरणीय संकट के मूल में मानव का वह दृष्टिकोण निहित है, जो प्रकृति को केवल संसाधन और उपभोग की वस्तु मानता है। इसके विपरीत भारतीय दर्शन प्रकृति को एक जीवंत, व्यवस्थित

और पवित्र तत्त्व के रूप में स्वीकार करता है। सांख्य दर्शन इस संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह दर्शन प्रकृति को सृष्टि का मूल कारण मानते हुए उसके गुण, क्रिया और संतुलन का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

सांख्य दर्शन न केवल सृष्टि की संरचना को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी बताता है कि मानव दुःख और संकट का मूल कारण प्रकृति के साथ उसका अविवेकपूर्ण संबंध है। इस दृष्टि से सांख्य दर्शन पर्यावरणीय चेतना के विकास हेतु अत्यंत प्रासंगिक बन जाता है।

सांख्य दर्शन : एक संक्षिप्त परिचय

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की प्राचीनतम दार्शनिक प्रणालियों में से एक है। इसका मूल प्रतिपादक कपिल मुनि को माना जाता है। सांख्य दर्शन द्वैतवादी है, जिसमें दो स्वतंत्र, अनादि और नित्य तत्त्व स्वीकार किए गए हैं—पुरुष और प्रकृति।

पुरुष शुद्ध चेतन, निष्क्रिय, अकर्ता और साक्षी है, जबकि प्रकृति जड़, सक्रिय और सृजनशील है। संपूर्ण जगत की उत्पत्ति, विकास और परिवर्तन प्रकृति के माध्यम से होता है। पुरुष केवल साक्षी भाव से प्रकृति की क्रियाओं का अनुभव करता है।

सांख्य दर्शन की विशेषता उसका तत्त्व-सिद्धांत है, जिसके अनुसार सृष्टि पंचविंशति तत्त्वों से निर्मित है। यह तत्त्व-संरचना भौतिक, जैविक और मानसिक जगत की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करती है।

सांख्य दर्शन में प्रकृति की अवधारणा

सांख्य दर्शन में प्रकृति को सृष्टि का मूल कारण माना गया है। यह न तो ईश्वर द्वारा निर्मित है और न ही किसी बाहरी शक्ति द्वारा नियंत्रित; बल्कि यह अपने स्वभाव के अनुसार सृजन करती है। प्रकृति का मूल स्वरूप त्रिगुणात्मक है।

प्रकृति को निष्क्रिय नहीं, बल्कि एक गतिशील, व्यवस्थित और नियमबद्ध तत्त्व के रूप में देखा गया है। यह दृष्टि आधुनिक पारिस्थितिकी (**Ecology**) के सिद्धांतों से मेल खाती है, जहाँ प्रकृति को एक स्व-संतुलित प्रणाली माना जाता है।

त्रिगुण सिद्धांत और पर्यावरणीय संतुलन

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति तीन गुणों से निर्मित है—सत्त्व, रजस् और तमस्।

सत्त्व: संतुलन, प्रकाश, शुद्धता और ज्ञान का प्रतीक।

रजस्: क्रियाशीलता, गति, इच्छा और परिवर्तन का प्रतीक।

तमस्: जड़ता, अज्ञान, अव्यवस्था और विनाश का प्रतीक।

सृष्टि का संतुलन तभी बना रहता है जब इन तीनों गुणों में सामंजस्य होता है। आधुनिक पर्यावरणीय संकट को सांख्य दर्शन के अनुसार त्रिगुणों के असंतुलन के रूप में देखा जा सकता है। औद्योगिक सभ्यता में रजस् और तमस् की अत्यधिक प्रधानता ने प्रकृति के संतुलन को नष्ट किया है।

मानव और प्रकृति का संबंध : सांख्य दृष्टि

सांख्य दर्शन मानव को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका द्रष्टा और सहभागी मानता है। जब पुरुष अविवेकवश प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करता है, तब भोग और उपभोग की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। यही प्रवृत्ति पर्यावरणीय संकट का मूल कारण है। विवेकज्ञान के माध्यम से पुरुष यह समझ पाता है कि वह प्रकृति से भिन्न है और उसका शोषण करना आत्मघाती है। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता से पूर्णतः साम्य रखता है।

पर्यावरणीय संकट : सांख्य दर्शन की व्याख्या

सांख्य दर्शन के अनुसार दुःख का मूल कारण अविद्या है। पर्यावरणीय संकट भी इसी अविद्या का परिणाम है। मानव स्वयं को प्रकृति से अलग और श्रेष्ठ मानकर उसका दोहन करता है। यह अविवेकपूर्ण दृष्टि प्रकृति के संतुलन को नष्ट कर देती है।

यदि सांख्य दर्शन के विवेकज्ञान को अपनाया जाए, तो मानव प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व की भावना विकसित कर सकता है।

सांख्य दर्शन और पर्यावरणीय नैतिकता

सांख्य दर्शन संयम, संतुलन और विवेक पर आधारित जीवन-शैली का समर्थन करता है। सत्त्व गुण की प्रधानता पर्यावरणीय चेतना को विकसित करती है। उपभोग के स्थान पर आवश्यकता, और शोषण के स्थान पर संरक्षण की भावना पर्यावरणीय नैतिकता का आधार है।

समकालीन संदर्भ में सांख्य दर्शन की प्रासंगिकता

आज सतत विकास की अवधारणा वैश्विक विमर्श का केंद्र है। सांख्य दर्शन की प्रकृति-केंद्रित दृष्टि सतत विकास की दार्शनिक

ISSN: 2349-6002

आधारभूमि प्रदान करती है। यह दर्शन बताता है कि विकास तभी सार्थक है, जब वह प्रकृति के संतुलन के अनुरूप हो।

निष्कर्ष (**Conclusion)**

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सांख्य दर्शन केवल मोक्ष-दर्शन नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन-दर्शन है। प्रकृति की अवधारणा, त्रिगुण सिद्धांत और विवेकज्ञान पर्यावरणीय चेतना के विकास में अत्यंत सहायक हैं। समकालीन पर्यावरणीय संकट के समाधान हेतु सांख्य दर्शन एक मूल्यपरक, संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

REFERENCES

[1] Dasgupta, S. N. (2013). A history of Indian philosophy (Vol. 1). Cambridge University Press.
[2] Larson, G. J., & Bhattacharya, R. S. (1987). Sāṁkhya: A dualist tradition in Indian philosophy. Princeton University Press.
[3] Radhakrishnan, S. (2009). Indian philosophy (Vol. 2). Oxford University Press.
[4] Sharma, C. D. (2012). A critical survey of Indian philosophy. Motilal Banarsidass.
[5] Chapple, C. K. (1993). Nonviolence to animals, earth, and self in Asian traditions. SUNY Press.
[6] Dwivedi, O. P. (2000). Environmental ethics: Hindu views. Worldviews, 4(2), 143–160.
[7] Guha, R. (2000). Environmentalism: A global history. Oxford University Press.